निष्कर्ष

प्राचीन भारत के इतिहास में अहिंसा शांति ब्यावस्था और सामाजिक या समाज पर प्रकाश डालने पर यह बात स्पषट होती है उस समय का जन जीवन किस प्रकार से अपना जीवन ब्यतीत करता था और वह सघर्ष से अपने जीवन की काला मे अहिंसा,शांति का समावेश करके अपना सामाजिक जीवन धीरे -धीरे विकास कर वैदिक,जैन, बौद्ध धर्म में अहिंसा का जो विस्तारित रूप में जीने लगा था लेकिन वह आज भी एक विशेष वर्ग का पोषद है। जो कि वैदिक धर्म में हिंसा का इतना विषाद रूप आता है कि उसको पीछे करने के लिए जैन धर्म और बौद्ध धर्म अहिंसा के सिद्धांतों को जन जन का केंद्र बिन्दु बनाया। जैन धर्म के अनुयाइयों ने चातुर्याम शिक्षा या चार आचरण पालन करने पर बल दिया जो ब्यक्ति के जीवन मे उपयोग हो सत्य (सदा सत्य बोलना).अहिंसा (प्राणियों कि हिंसा न करना).अस्तेय (चोरी न करना).अपरिग्रह (सम्पति न रखना) अहिंसा परम धर्म है। अहिंसा ही परम तप है। अहिंसा ही परम सत्य है और अहिंसा ही धर्म का प्रवर्तन करने वाली है। यही संयम है, यही दान है, परम ज्ञान है और यही दान का फल है । जीवन के लिए अहिंसा से बढ़कर हितकारी, मित्र और सुख देने वाला दूसरा कोई नहीं है। जब आरंभिक भारतीय बौद्ध धर्म के संदर्भ में हिंसात्मक क्रियाकलापो को मोटे तौर पर देखते है तो उसमे भी यही बात स्पष्ट होती है। संगठित झगडों, जैसे युद्ध आदि तथा असंगठित झगड़ों,जैसे हत्या अत्महत्या,गर्भपात तथा एकच्छिक मृत्यु आदि तथा द्वारा होने वाली हिंसा । यज्ञक कर्मकांडों में जिनमें पशु बलि तथा कभी – कभी मनुष्य की बालि दी जाती थी द्वारा होने वाली हिंसा आदि शिकारियो, कसाइयों,मछुआरों आदि के हाथों जो मनुष्य के भोजन तथा अन्य अवशकताओ – विशेषकर औषधि के उद्देश्य से की जाती थी। इस प्रकार मनुष्य द्वरा मांस तथा मछली खाना हिंसा का महत्व पूर्ण अनुक्रम था कृषि कार्य तथा इससे संबन्धित अन्य क्रियाकलाप

जैसी,खुदाई,सिचाई खेतो की जुताई, फसलों, घास, और वृक्षो, मिट्टी आदि मे निवास करते थे,को नष्ट किए जाने जैसे आदि क्रियाकलापों द्वरा होने वाली हिंसा जो लोग अपने ब्यवहारिक जीवन में उपयोग करते थे। प्राचीन भारत के इतिहास के पूर्व वैदिक समज का आधार वर्ण ब्यावस्था थी। समज चार वर्णो ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,और शूद्रों में विभाजित था। उस समय वर्ण ब्यावस्था लचीली थी कोई भी ब्यक्ति अपने कार्यो को बदल कर वर्ण परिवर्तन कर सकता था अर्थात वर्ण ब्यवस्था कर्म प्रधान थी चरो वर्ण कि उत्पाती परम पुरुष से मनी जाती थी कार्यो के अनुसार समाज चार वर्णो में विभाजित था। समाज में ब्राह्मणो का सामाजिक स्तर बहुत ऊचा था ब्राह्मणो के प्रमुख कार्य आध्य्यन यज्ञ करना था। वश्यों का प्रमुख कार्य ब्यापार और कृषि कार्य था और शूद्रो का प्रमुख कार्य तीनों वर्णो की सेवा करना था। उसी परिपाटी के द्वारा आज भी हिंदू समाज बाटा हुआ है उन्ही प्राचीन रूढ़ियो के द्वारा आज चल रहा है लेकिन समाज मे शांति अहिंसा यात्रा शिक्षण पद्धति, समाज सुधार तथा विश्व शांति के क्षेत्र में आचार्य महाप्रज्ञ का प्रयास जारी है। आचार्य श्री ने अब अहिंसक विश्व के निर्माण पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। विश्व के वर्तमान परिदृश्य में यह बात प्रस्तुत की जा रही है जहां हम प्रायः प्रतिदिन युद्ध व आतंकवाद की खबरें सुनते हैं। उन्होंने अहिंसा यात्रा के रूप में एक ऐसी यात्रा प्रारम्भ की है जो अहिंसा सौहार्द भ्रातृत्वभाव एवं शांति का संदेश प्रसारित कर रही है।

हिंदू, जैन एवं बौद्ध परंपरा में शांति को मानसिक शांति, आंतरिक शांति, अंतर्वैयक्तिक शांति, अहिंसा, प्रकृति के साथ अहिंसक व्यवहार का नैतिक अस्त्र माना है। इसी प्रकार चीनी एवं जापानी परंपरा में संस्कृति में समरसता और वैयक्तिक, सामाजिक एवं वैश्विक स्तर पर अनुशासन के साथ ही साथ प्रकृति से संतुलन को शांति मानते है। शांति अपने आप में एक विस्तृत अवधारणा है एवं उसके अनेक आयाम हैं। शांति, मूलतः, निश्चिंतता, संघर्ष रहित स्थिति के साथ

प्रेम की स्थिति की घटना है। अवधारणा के रूप में शांति एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटना है, जो कि सामाजिक हित एवं ब्रहांड के हितों को प्रदर्शित करती है। प्रतिष्ठित शांति शोधक जोहान गालटुंग ने हिंसा रहित स्थिति को शांति बताया है । हमें शांति क्रिया, शांति आंदोलन एवं शांति शोध तीनों पर विचार करने की आवश्यकता है। शांति क्रिया, हिंसा की विरुद्ध की जाने वाली क्रिया है। शांति शोध एक निश्चित स्थान पर हो रही हिंसा को समझना एवं उसका निदान ढूंढना है एवं शांति आंदोलन समाज में हिंसा को कम करने का प्रयास है। अतः शांति की स्थापना के लिए साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी ताकतों पर रोक लगाना आवश्यक है। विश्व में शांति स्थापना करने के लिए विविध प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन, अभी तक शांति-स्थापना का कार्य न के बराबर हुआ है क्योंकि इसके समक्ष अनेक चुनौतियां हैं जो निरंतर शांति के मार्ग को अवरुद्ध कर रही हैं। विश्व शांति के समक्ष जो वैश्विक समस्या बाधक हो रही हैं, उनका प्रमुख कारण व्यक्ति एवं समाज के मध्य होने वाली अंतःक्रियाएं हैं। वैश्विक समस्याएं स्थानीय भी हो सकती हैं, और क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय भी। इन समस्याओं को सामान्य क्षेत्रों में आसानी से पहचाना जा सकता है। जैसे, जनसंख्या एवं विकास, आर्थिक समस्या, शस्त्रीकरण, भोजन, ऊर्जा, सामाजिक समस्या, पर्यावरण, विज्ञान एवं तकनीक, आतंकवाद, साम्राज्यवाद, सांप्रदायिकता, भाषावाद एवं भ्रष्टाचार इत्यादि। जो विश्व-जनमत पर शांतिवाद के नैतिक प्रभाव का दर्शाता है।

अपितु हम यह कह सकते है कि प्राचीन काल से चली आ रही अहिंसा,शांति की अवधारणा समाज के लिए बहुत उपयोगी है नैतिक आधार पर राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर के नव समाज को नई दिशा देने में सफल रहा है समाज मे अहिंसा एवं शांति की प्रक्रिया अनवरत रूप से चलती रहेगी। जिसे समाज समय समय पर अपने आधार पर उपयोग करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आशा प्रसाद, कस्तूरबा, कमला प्रभावती, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2003,

आशारानी व्होरा, महिलाएं और स्वराज्य, नई दिल्ली, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, संस्करण-2012,

आशारानी व्होरा, महिलाएं और स्वराज्य, नई दिल्ली, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, संस्करण-2012,

कुमार डॉ. मनोज. (1995). लोक तंत्र एवं विश्वशान्ति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

ग्रीयर जर्मेन. (2005). बधिया स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

चट्टोउपाध्याय देवी प्रसाद,(2001).प्राचीन भारत में विज्ञान और समाज, ग्रंथशिल्पी प्रकाशन, दिल्ली

जैन प्रो. माहावीर सरन, (2006).भगवान माहीविर एवं जैन दर्शन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

थापर रोमिला (अनु. आदित्य नारायण सिंह). (2001). प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली

धर्म रक्षित त्रिपिटिकाचार्य डॉ.भिक्खु. (2007). सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

परांजपे बिंदा, (अनु. यदुनाथ चौबे). (2008). प्राचीन भारत, संवाद पराकाशन मेरठ

पाण्डेय एस. के.,,प्राचीन भारत, प्रयाग एकेडमिक पब्लिकेशन ऐन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद

पाण्डेय गोविंद चंद. (2005). वैदिक संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाण्डेय डॉ. जय नारायन. (2008).पुरातत्व विमर्श, प्राच्य बिद्या संस्थान, इलाहाबाद

प्रभात कुमार, स्वतंत्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, नई दिल्ली हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, संस्करण : 2000,

बासम,, आधुनिक भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

बी. एल. ग्रोवर, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा संवैधानिक विकास, नई दिल्ली, एस. चांद एंड कंपनी, 1985,

बौद्ध आचार्य जुगल किशोर. (2008). कुशीनारा, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

महाजन डॉ. धर्मवीर, महाजन डॉ. श्रीमती कमलेश. (2008).सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियाँ, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली

मुखर्जी राधा कुमुद. (2009). प्राचीन भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

मोदी प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद. (2207). गांधी दृष्टि, मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली

विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता-संग्राम और महिलाएं, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन, संस्करण 2008,

विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, आगरा, लक्ष्मीनारायण, 1988,

शर्मा डॉ. के. डी., शर्मा डॉ. नीरज. (2005). प्राचीन भारत का इतिहास, आकाश पब्लिशर्स ऐन्ड ड्रिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

शर्मा डॉ. रामविलाश. (2008). गांधी, अंबेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

शर्मा यौवेश चंद्रा. (1999). काटन खादी इन इंडियन इकोनामी, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद

शाक्य डॉ. राजेन्द्र प्रसाद. (2001). बौद्ध दर्शन, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल मध्यप्रदेश

श्रीवास्तव के. सी., प्राचीन भारत का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

सराओ प्रो. के. टी. एस.. (2004). प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली

www. peacetadiwikipidiya.com

Wrdhahindishbdkosh.com

www.ahinshavishvkosh.com

www.ancenthistriincyaklopidiya

www.ancienthistriwikipidiya.com

www.bharatgyan kosh.com

www.bouddhdhrmavikipidiya.com

www.hindisamay.com

www.jaindhrmawikipidiya.com

www.pib.com

www.vishashantiwikipidiya.com

www.waidikdhrmavikipidiya.com